International Journal of Applied Research 2020; 6(11):223-225

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(11): 223-225
www.allresearchjournal.com
Received: 13-09-2020
Accepted: 17-10-2020

डॉ० विमलेन्दु कुमार विमल
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
एस. एम. आर. सी. के.
महाविद्यालय समस्तीपुर,
सिरदिलपुर, पटोरी, समस्तीपुर,
बिहार,पिन–848504, भारत

Corresponding Author:
डॉ० विमलेन्दु कुमार विमल
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
एस. एम. आर. सी. के.
महाविद्यालय समस्तीपुर,
सिरदिलपुर, पटोरी, समस्तीपुर,
बिहार,पिन–848504, भारत

छायावाद–युग

डॉ० विमलेन्दु कुमार विमल

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम की अवधारणा के अंतर्गत छायावाद–युग की चर्चा की गई है। द्विवेदी–युग में इतिवृत्तात्मक साहित्य पर बल दिया गया था। द्विवेदी–युग की इस इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप छायावाद का प्रवर्तन हुआ। इस वाद का प्रभाव सन् 1910 से 1940 तक रहा। कहा जाता है कि द्विवेदी युगीन मुकुटधर पाण्डेय ने सर्वप्रथम व्यंग्यात्मक रूप में 'छायावाद' शब्द की स्वच्छन्तावादी नवीन अभिव्यक्तियमयी रचनाओं के लिए प्रयोग किया था जो कालांतर में इस कविता के लिए रूढ़ हो गया और इस प्रकार की कविताएँ छायावादी कविता कहलाने लगीं। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक–विधान, वैयक्तिकता तथा उपचार–वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृत्ति छायावाद की विशेषताएँ हैं। छायावाद के विश्रुत कलाकारों में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंद पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। यों माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', गोपाल सिंह 'नेपाली' आदि की रचनाओं में भी छायावाद की झलक देखी जा सकती है।

इन छायावादी कवियों की रचनाओं में भी प्रेमाभिव्यक्ति हुई है। आधुनिक हिन्दी में छायावाद के जनक माने जाने वाले सिद्धहस्त कवि जयशंकर प्रसाद की रचनाओं में जहाँ लौकिक प्रेम की व्यंजना हुई है, वहाँ उन्होंने अपनी अनेक कविता में प्रकृति–प्रेम, राष्ट्र–प्रेम और संपूर्ण मानव जाति के प्रति भी प्रेम प्रदर्शित किया है। जब प्रलयोपरांत मनु अपने को अकेले देखकर चिंता निमग्न हैं और उनके मन में तरह–तरह की भावनाएँ उठती रहती हैं तो ऐसी ही स्थिति में श्रद्धा उनके समक्ष उपस्थित होती है और वह उनसे कहती है कि तुम व्यर्थ ही दुःख का बोझढो रहे हो। तुम्हें कोई जीवन–साथी चाहिए जो तुम्हें सहयोग दे सके। मैं तुम्हारी जीवन–संगिनी बनकर तुम्हारें कर्मों में सहयोग देने को तत्पर हूँ –

समर्पण लो–सेवा का सार, सजल–संसृति का यह पतवार,
आज से यह जीवन उत्सर्ग इसी पद–तल में विगत–विकार।
दया, माया, ममता लो आज, मधुरिमा लो, अगाध विश्वास,
हमारा हृदय–रत्न निधि स्वच्छ तुम्हारे लिए खुला है पास। [1]

मनु के मन में श्रद्धा के प्रति आकर्षण का भाव उत्पन्न होता है और वे श्रद्धा को यह कहते हुए अपना लेते हैं कि–

क्या तुम्हें देखकर आते यों मतवाली कोयल बोली थी?
उस नीरवता में अलसाई कलियों ने आँखें खोली थीं?
जब लीला से तुम सीख रहे कोरक–कोने में लुक रहना,
तब शिथिल सुरभि से धरणी में बिछलन न हुई थी? सच कहना! [2]

इस प्रकार श्रद्धा और मनु के लौकिक प्रेम का चित्रण करने में कवि को पूर्णतः सफलता मिली है। इस लौकिक प्रेम की व्यंजना उन्होंने अपनी कतिपय कविताओं में की है।

इसी प्रकार प्रकृति–प्रेम के चित्रण में भी कवि को यथेष्ट सफलता मिली है। 'प्रसाद जी के काव्य में अनेक स्थलों पर प्रकृति का स्वाभाविक चित्रण किया गया है। उनकी 'लहर' नामक रचना में अनेक कविताएँ प्रकृति–वर्णन की हैं। इस रचना में प्रातःकालीन प्रकृति के वर्णन सेयुक्त इनकी एक प्रसिद्ध कविता है। [3] उस कविता की कुछ पंक्तियाँ यहाँ द्रष्टव्य हैं–

बीति विभावरी जाग री,
अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा–घट ऊष–नागरी, [4]

यहाँ प्रकृति का मानवीकरण करके कवि ने अपने काव्य में अद्भुत सौंदर्य की सृष्टि कर दी है। प्रसाद जी के काव्यों के अध्ययन से विदित होता है कि उन्होंने अपने काव्यों में देश–प्रेम की व्यंजना भी की है। देश की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने देशवासियों का आह्वान इन पंक्तियों में किया है–

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्जवला
स्वतंत्रता पुकारती।[5]

इन पंक्तियों में देश–प्रेम की भावना पराकाष्ठा पर पहुँची हुई दिखाई देती है।
इसी भाँति प्रसाद की रचनाओं में संपूर्ण मानवता के प्रति भी प्रेम का भाव दर्शाया गया है, जो इन पंक्तियों सेस्पष्ट है–

चेतन का साक्षी मानव,
हो निर्विकार हँसता–सा,
मानस के मधुर मिलन में,
गहरे–गहरे धँसता–सा,। [6]

मानवता के प्रति यह प्रेम–व्यंजना प्रसाद के अनेक ग्रंथों में हुई है।
सुमित्रानंदन पंत छायावाद के दूसरे कवि हैं। जिन्होंने भी सौंदर्य और प्रेम की अभिव्यंजना अपने काव्यों में की है। पंत मुख्यतः प्रकृति के कवि हैं, किंतु उनकी रचनाओं में दलितों के प्रति भी प्रेम–भावना व्यक्त हुई है। इसी प्रकार उन्होंने नारी के प्रति भी प्रेम की व्यंजना की है। पंत ने अपनी रचनाओं में जहाँ ग्रामीण समाज के प्रति भी प्रेम अपना प्रेम प्रदर्शित किया हैं, वहाँ राष्ट्र के प्रति भी प्रेमाभिव्यंजना की है। इतना ही नहीं उनकी रचनाओं में मानवता के प्रति भी प्रेम की व्यंजना हुई है। जहाँ तक कवि के प्रकृति–प्रेम की बात है पंत जी के काव्य में प्रकृति का बहुत सुंदर चित्रण हुआ है। पंज जी ने प्रकृति के प्रति आकर्षण की बात स्वयं भी कही है। वे मानते हैं कि प्रकृति वर्णन का कारण उनकी जन्मभूमि की सुंदरता है। अल्मोड़ा के आस–पास की प्रकृति ने पंत जी के मन में प्रकृति के प्रति सौंदर्य को जाग्रत कर दिया।[7] प्रकृति के सुंदर रूप के वर्णन में उन्होंने आलम्बन रूप में प्रकृति का वर्णन कियाहै। यहाँ ग्राम–संध्या की प्रकृति का बड़ा ही सजीव चित्र खींचा गया है–

खग कूजन भी हो लीन, निर्जन गोपथ अब धूलि हीन।
धुसर भुजंग सा जिह्व क्षीण।
झिंगुर के स्वर का प्रखर तीर, केवल प्रशांति को रहा चीर,
संध्या प्रशान्ति को कर गंभीर।[8]

इसी भाँति 'प्रथम रश्मि का आना रंगिणि' 'बदल' नौका–विहार' आदि कविताओं में भी प्रकृति के एक–से–एक चित्र उभरे हैं। निम्नलिखित पंक्तियों के अंतर्गत चाँदनी रात में रात में नौका–विहार करने का बड़ा ही मनोरम चित्र उसके संपूर्ण वातावरण के साथ प्रस्तुत करने में कवि ने बड़ी ही कुशलता का परिचय दिया है, यथा–

शांत स्निग्ध ज्योत्स्ना उज्जवल,
अपलक अनन्त नीरव भूतल।
सैकत–शय्या पर दृग्ध धवल,
तन्वंगी गंगा, ग्रीष्म विरल।[9]

यहाँ प्रकृति का कितना ही सुंदर चित्र अप्रस्तुत–योजना द्वारा अंकित किया गया है।
मार्क्सवाद से प्रभावित होकर कवि ने दलितों और गरीबों के प्रति भी सहानुभूति दर्शायी है और उनके प्रति अपने हृदय का प्रेम प्रदर्शित किया है। 'मार्क्सवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति में कवि साम्यवादी साहित्य में बहुधा प्रयुक्त 'जोंक' शब्द का प्रयोग करता है। 'जोंक अत्यंत ही कोमल होता है, किंतु रक्त के शोषण में वह किसी भी प्रकार की दया नहीं दिखाता। समाज का पूँजीपति वर्ग भी 'जोंक' की तरह शिष्ट, कोमल और अहिंसक प्रतीत होता है, किंतु सर्वहारा का रक्त चूसने में किसी भी प्रकार की रियायत नहीं करता,।[10] कवि के शब्दों में–

वे नृशंस हैं, वे जन के श्रम–बल से पोषित।
दुहरे धनी, जोंक जग के, भू जिससे शोषित।[11]

पंत ने अपनी रचनाओं में नारी के प्रति भी प्रेम की भावना व्यंजित की है। नारी के प्रति उन्होंने जो प्रेम प्रदर्शित किया है, उसमें उनकी कल्पना ने विलक्षण सौंदर्य की सृष्टि कर दी है। यहाँ कवि का नारी के प्रति प्रेम व्यंजित हुआ है–

स्नेहमयि! सुंदरतामयि!
तुम्हारे रोम–रोम से नारि!
मुझे है स्नेह अपार,
तुम्हारा मृदु उर ही, सुकुमारि।
मुझे है स्वर्गागार![12]

छायावाद–युग के कवि महाप्राण महाकवि सुर्यकांत त्रिपाठी ''निराला'' के काव्य के बड़े ही विस्तृत आयास है। उनकी रचनाओं में लौकिक प्रेम, अध्यात्मिक प्रेम, देष प्रेम और विष्व–मानवता के प्रति प्रेम का भाव व्यंजित हुआ है। निराला की रचनाओं में वात्सल्य–प्रेम का भाव भी व्यक्त हुआ है, मगर एक बहुत कम। उनके द्वारा रचित 'सरोज–स्मृति' शीर्षक कविता में वात्सल्य–प्रेम से संबंधित कुछ पंक्तियाँ आयी हैं। कवि तो सतत अपने जीवन में उपेक्षा और अर्थ–संकट का दंश झेलता रहा, फिर वह अपनी प्यारी पुत्री सरोज के लिए कुछ कर ही क्या सकता था। यद्यपि सरोज के प्रति उनके हृदय में अपार प्यार का भाव था, तथापि वह उसके लिए कुछ भी न कर सका। इस संबंध में कवि ने स्वयं ही कहा है–

धन्ये! मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित कर न सका!
जना तो अर्थागमोपाय
पर रहा सदा संकुचितकाय,।[13]

इन पंक्तियों में प्रकारांतर से वातसल्य–प्रेम की भावना ही तो व्यंजित हुई है।
समाज के उपेक्षित वर्गों के प्रति भी कवि ने प्रेम–भाव दर्शाया है। सर्वहारा वर्ग वर्तमान समाज में उपेक्षित वर्ग माना जाता है। इलाहाबाद के पथ पर चिलचिलाती धूप में पत्थर तोड़ती हुई मजदूरिन का एक चित्र यहाँ दर्शनीय है–

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर–
वह तोड़ती पत्थर। [14]

इन पंक्तियों से स्पष्ट है कि निराला के हृदय में उपेक्षित सर्वहारा वर्ग के प्रति भी काफी प्रेमाभिव्यंजना है।

भिक्षुक समाज का सबसे अधिक उपेक्षित प्राणी है। उसकी दयनीय स्थिति का जो चित्र कवि ने खींचा है, वह बड़ा ही स्वाभाविक प्रतीत होता है, जैसे–

वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को, भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता
दो टूक कलेजे के करता, पछताता पथ पर आता।[15]

महादेवी वर्मा अपनी रचनाओं में आकुल हृदय का सारा क्रनदन भड़ देती है। वह अपने उस अज्ञात अराध्य में मिलकर सदनोंरूप हो जाना चाहती है। जो इन पंक्तियों में स्पष्टहै–

मंदिर–मंदिर मेरे दीपक जल!
प्रियतम का पथ आलोकित कर।[16]

छायावाद के अन्यान्य कवियों में ही भगवती चरण वर्मा, नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', सुभद्रा कुमारी चौहान आदि की परिगणना की जाती है। इन कवियों ने भी अपनी रचनाओं में किसी–न–किसी रूप में प्रेम–भावना को व्यंजित किया ही है। अब हम प्रगतिवादी युग के कवियों की प्रेम–व्यंजना पर विचार करेंगे।

संदर्भ

1. जयशंकर प्रसाद– कामायनी, श्रद्धा सर्ग सं. 2000, अनुपम प्रकाशन, पटना, पृ.सं. 31
2. वही, पृ.सं. 33
3. डॉ. श्रीनिवास शर्मा– हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, प्र. सं., तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 60
4. जयशंकर प्रसाद– लहर, प्र.सं. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ.सं. 16
5. सं. वाचस्पति पाठक– प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी, 11वाँ संस्करण, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–1, पृ.सं. 67
6. जयशंकर प्रसाद– कामायनी, 2000, पृ.सं. 140, अनुपम प्रकाशन, पटना–4
7. डॉ. श्रीनिवास शर्मा– हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 109
8. डॉ. श्रीनिवास शर्मा– हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधिकवि, प्र.सं., पृ.सं. 110
9. सुमित्रानंदन पंत– तारापथ, संस्करण 1996, लोक भारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद–1 पृ.सं. 114–115
10. डॉ. कविता वर्मा– महाकवि पंत की शब्द–सम्पदा, प्र.सं. ,कैपिटल पब्लिसिंग हाउस, नया टोला, मुजफ्फरपुर, पृ.सं. 85
11. सुमित्रानंदन पंत– चिदम्बरा, पृ.सं. 50
12. सुमित्रानंदन पंत– पल्व, पृ.सं. 36
13. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– अनामिका, प्रथम छात्र संस्करण, राजकमलप्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.सं. 40
14. डॉ. श्रीनिवास शर्मा– हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, पृ. सं. 98
15. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– अनामिका, पृ.सं. 64
16. महादेवी वर्मा– नीरजा पृ.सं. 55